श्रीमती एनी बेसेंट और भारतीय थियोसॉफिकल सोसाइटी

डॉ0 कल्पना द्विवेदी *

एनी बेसेंट 14 वर्ष के उपरान्त 10 मई, 1889 को थियोसॉफिकल सोसाइटी की सदस्या बन गयीं और एच0पी0बी0 की मृत्यु के बाद वे 1907 में इसकी अध्यक्ष भी बनीं। आर्य समाजी आन्दोलन से प्रभावित होकर ''इस समाज के संस्थापक भारत में स्वामी दयानन्द के निमन्त्रण पर 1879 में पहुँचे थे।''[1]

श्रीमती एनी बेसेंट का मानना था कि इस सोसाइटी के नियमों के अनुसार धर्म ही केवल राष्ट्रीयता को प्रेरित कर सकता है। इस सोसाइटी के सदस्य सादा जीवन व्यतीत कर देश की सेवा करना अपना परम धर्म समझते हैं। इन धार्मिक–सामाजिक सुधार आन्दोलनों ने दो प्रकार से राष्ट्रीय चेतना के विकास करने में सहायता प्रदान की। उनके द्वारा सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों को नष्ट करके समाज में स्वस्थ जीवन और चिंतन को स्थापित किया गया क्योंकि एक स्वस्थ समाज कभी भी राजनीतिक रोगों को स्वीकार नहीं कर सकता। दूसरे उन्होंने प्रत्यक्ष रूप में उदारवादी तथा राष्ट्रीय राजनैतिक विचारों का प्रचार किया।''[2]

मैडम ब्लैवट्स्की ''रहस्यमयी शक्तियों'' का प्रयोग करके लोगों को यह विश्वास दिलाती थीं कि इस भौतिक जगत से परे भी कुछ है। जैसा कि स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि 'अमरीकी की आध्यात्म में भारतीय कलम लगाई थी।' एनी बेसेंट ने लिखा है कि थियोसॉफिकल समाज चित या आत्मा में विश्वास करता है और यह मानव व ईश्वर के चिन्तन की प्रकृति को समान समझता है। चिंतन के द्वारा मनुष्य की भौतिक आकांक्षाओं पर काबू पाया जा सकता है।

गीता उपदेशक श्री कृष्ण की तरह ही थियोसॉफिस्ट श्रीमती एनी बेसेंट का मानना है कि ''आत्मा अजर व अमर है''। वह एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को धारण करती है। थियोसॉफिकल ''समाज के अनुयायी ईश्वर ज्ञान, आत्मिक हर्षोन्माद, अन्तर्ज्ञान द्वारा प्राप्त करने का प्रयत्न करते थे। ये लोक, पुनर्जन्म तथा कर्म में विश्वास करते हैं और सांख्य तथा उपनिषदों के दर्शन द्वारा प्रेरणा प्राप्त करते हैं। इनका विश्वास आध्यात्मिक भातृ–भाव में है।''[3] थियोसॉफिस्टों के प्रयोग से मनोविज्ञान बड़ी

* असिस्टेंट प्रोफेसर, रा0वि0, डॉ0 आर0पी0आर0पी0जी0कालेज, बरुआसागर, झाँसी, उ0प्र0

तेजी से आगे बढ़ रहा था जिनकी कभी किसी ने खोज नहीं की थी। बहु व्यक्तित्व की अजीब–अजीब पहेलियाँ सामने आ रही थीं और जिनमें सबसे आश्चर्यजनक तो थी, मानसिक क्रियाओं की स्पष्ट तीव्रगति।

थियोसॉफी का विज्ञान ''गुह्य विज्ञान'' है। यह साधारण विज्ञान की तरह नहीं है जो अनुमान, प्रयोग और निष्कर्ष पर आधारित हो बल्कि यह तत्वदर्शी विशेषज्ञों के आन्तरिक स्वतः स्फूर्त ज्ञान पर, जो माध्यम (मीडियम) के जरिये से प्राप्त होता है, जिसमें ब्रह्माण्ड, मनुष्य, क्रिया, प्रतिक्रिया, विकास और मनुष्य के पूर्णता प्राप्त करने का ज्ञान है। यही थियोसॉफी के ज्ञान का भीतरी स्वरूप है।

थियोसॉफिकल सोसाइटी की ओर मध्यमवर्गीय हिन्दू समाज के बहुत से शिक्षित आकृष्ट हुये। इन लोगों ने जब एक प्रसिद्ध श्वेतांग महिला श्रीमती एनी बेसेंट को हिन्दू धर्म पर धाराप्रवाह भाषण देते हुये सुना तथा जो उन बातों का समर्थन कर रहीं थीं– जिनको ईसाई मिशनरियों ने तथा यूरोप के लेखकों ने असत्य तथा कुसंस्कार कहकर निन्दा की थी। एनी बेसेंट के थियोसॉफिकल सोसाइटी में प्रवेश के बाद – इस संस्था के ''गुह्य विद्या'' प्रेम से योग के रहस्यवादी तत्व का सत्य प्रमाणित हुआ और इसे विलियम कुक जैसे वैज्ञानिक का समर्थन मिला जिससे लोगों का इसमें विश्वास बढ़ा तथा शिक्षित हिन्दुओं को आन्तरिक बल मिला। अपने धर्म विरोधियों के आक्रमण के विरुद्ध एक रक्षा कवच भी मिला।

''थियोसॉफिकल विचारकों ने हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करते हुये भी धार्मिक सहिष्णुता को प्रोत्साहन दिया और संसार के सभी वर्गों में भ्रातृत्व भाव उत्पन्न करने की चेष्टा की। आर्य समाज की भाँति ही थियोसॉफिकल सोसाइटी ने भारतीयों में अतीत के प्रति और अपनी धार्मिक विरासत के प्रति स्वाभिमान जाग्रत करके भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में महत्त्वपूर्ण ढंग से हाथ बँटाया।''[4] थियोसॉफिकल सोसाइटी भारतीयों में आत्म–सम्मान की भावना जाग्रत करने में एक शक्तिशाली तत्व सिद्ध हुआ।

''थियोसॉफिकल सोसाइटी में आध्यात्मिक विषयों जैसे– अवतार, काम–शरीर और दूसरे अलौकिक शरीरों और दिव्य पुरुषों के आस–पास दिखाई देने वाले ''तेजोवलय'', कर्मतत्व, इन विषयों पर चर्चा व विचार–विमर्श किया जाता था। मैडम ब्लैवट्स्की तथा हिन्दू–धर्म ग्रन्थों, बुद्ध धर्म के धम्मपद, ''पाइथागोरस तथा तयाना के अपोलोनियस और कई ऋषियों और दार्शनिकों के ग्रन्थों का जिक्र आया करता था।''[5] परन्तु ये सब कुछ बहुत ही रहस्यपूर्ण होता था। पाइथागोरस एक यूनानी तत्ववेत्ता था जो ई0पू0 छठी सदी में हुआ था। यह पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धान्तों को मानता था। इसकी दृष्टि में पशुओं में आत्मा थी और ये तथा इनके अनुयायी मांसाहार से नफरत करते थे।

थियोसॉफिकल सोसाइटी में कहा गया है कि सारे धर्म सत्य हैं और सभी मनुष्य भाई–भाई हैं। जब अंग्रेजों की नस्लों की श्रेष्ठता की डींग गूँज रहीं थी उस समय श्रीमती बेसेंट व उनके साथियों के हिन्दू धर्म के समर्थन का बहुत प्रभाव पड़ा। एनी बेसेंट का कथन था– ''मैं जिस भारत को हृदय से अपना चुकी हूँ उसकी सभ्यता ऐसी है, जिसमें आध्यात्मिक ज्ञान का सबसे ऊँचा स्थान था। लोग आध्यात्मिक सत्य की कद्र करते थे और उसकी खोज करते थे। मैं जिस भारत के निर्माण के लिये जीवन अर्पण करना चाहती हूँ, वह ऐसा भारत है जो प्राचीन दर्शन में निष्णात है, प्राचीन धर्म से ओत–प्रोत है। वह एक ऐसा भारत है जिसका मुँह सब देशों को आध्यात्मिक जीवन के निमित्त ताकना पड़ेगा।''[6] एनी बेसेंट की यह घोषणा अमृत बाजार पत्रिका में प्रकाशित की गयी परन्तु इसके बावजूद थियोसॉफिकल सोसाइटी के सबसे अधिक जिस कार्य को सफलता मिली, वह था नव–युवकों की शिक्षा का कार्य।

यह सोसाइटी मूल रूप से सभी धर्मों के सारतत्व का प्रतिनिधित्व करती थी। श्रीमती बेसेंट ने घोषणा की– ''विश्व के महान धर्मों में मैं किसी अन्य धर्म को इतना पूर्ण, इतना वैज्ञानिक, इतना दार्शनिक और इतना आध्यात्मिक नहीं पाती हूँ जितना हिन्दू धर्म को।'' इस सोसाइटी ने हमारी जनता को यह सिखाया कि अपने अतीत और उसकी विरासत के प्रति लज्जित होने की बजाय उन्हें उस पर न्यायोचित गर्व करने का अधिकार है। क्योंकि उनके प्राचीन ऋषि और दार्शनिक उच्चतम सत्यों के प्रवक्ताओं और उनके ग्रन्थ, जो आज इतना गलत समझे जाते हैं उच्चतम मानवीय ज्ञान और प्रज्ञा के भण्डार थे।

आर्य समाज की भाँति ही थियोसॉफिकल सोसाइटी भी पहले जाति प्रथा का समर्थन करती थी। परन्तु कुछ समय पश्चात् इसने छुआछूत आदि का विरोध किया। इस सोसाइटी ने लड़कों, स्त्रियों तथा दलित वर्ग के लिये स्कूल खोले। बाल विवाह का विरोध किया। सर्वप्रथम एनी बेसेंट ने ''आलकॉट पंचम स्कूल'' अडयार में स्थापित किया तथा इस दिशा में उनका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य 1898 में वाराणसी में ''सेण्ट्रल हिन्दू कालेज'' की स्थापना का था जो आगे चलकर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का आधार बना। एक जगह एनी बेसेंट ने लिखा कि– ''और बातों के अतिरिक्त भारतीय आदर्शों पर आधारित और पश्चिम की विचारधारा और संस्कृति के सम्मिश्रण से सम्भव (उनके द्वारा शासित या नियंत्रित) शिक्षा और राष्ट्रीय भावना का विकास भारत के लिये आवश्यक है।''[7]

देव समाज जैसे कुछ छोटे–मोटे धर्म सुधार आन्दोलन भी हुये जिन्होंने भारतीयों को राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत करके उनकी सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप बदलने की कोशिश की।

अत्यधिक व्यापक आन्दोलनों की तरह इन आन्दोलनों ने भी सामाजिक सम्बन्धों के प्रजातन्त्रीकरण और उनमें राष्ट्रीय भावनाओं के प्रचार का प्रयत्न किया। ये भी धार्मिक रूपों में हिन्दुओं के नए राष्ट्रीय जागरण के परिचायक थे।

श्रीमती एनी बेसेंट ने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है कि ''वेदों तथा उपनिषदों की भारतीय संस्कृति पाश्चात्य संस्कृति से कहीं अधिक ऊँची है।'' नेहरू ने अपनी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' में लिखा है– ''हिन्दू मध्यवर्ग को अपने आध्यात्मिक तथा राष्ट्रीय गौरव का भान कराने में श्रीमती एनी बेसेंट का प्रभाव विशेष शक्तिशाली था।''[8]

अड्यार थियोसॉफी का प्रधान कार्यालय था। यहाँ पर श्रीमती एनी बेसेंट का अद्वितीय संग्रह विद्यमान है। भारत में रहस्यवाद, तन्त्रशास्त्र, योगविद्या के अध्ययन के लिये बेसेंट द्वारा पल्लवित यह स्थान विश्व के तत्वज्ञानियों तथा बुद्धिजीवियों के लिये तीर्थ स्थल बन चुका है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1991 का वर्ष ''द सीक्रेट डाक्ट्रीन'' की लेखिका एच0पी0वी0 ब्लावत्सकाया (ब्लेवट्स्की) वर्ष घोषित किया था। वे ब्रह्म ज्ञान तथा अन्तर्राष्ट्रीय ब्रह्म ज्ञान सभा की संस्थापिका थीं। एस0जेले0 जनेवा लिखते हैं कि ''सोवियत लोगों में ब्लावत्सकाया के बारे में बहुत अधिक अभिरुचि पैदा हो गयी है। भारत के चेन्नई (मद्रास) नगर में स्थित अडयार में थियोसॉफिकल सोसाइटी का मुख्यालय आज भी है जिसकी स्थापना ब्लावत्सकाया ने की थी। इस महान महिला पर सोवियत संघ में अनेक प्रदर्शनियाँ, बैठकें एवं वैज्ञानिक सम्मेलन आयोजित किये गये।''[9] इस प्रकार थियोसॉफी समाज ने भारतीय राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो अविस्मरणीय है।

सन्दर्भ

1. ए0 अवस्थी, आर0के0 अवस्थी : आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक या राजनीतिक चिंतन, पृष्ठ 97–98
2. वी0पी0एस0 रघुवंशी : राष्ट्रीय आन्दोलन तथा भारत का संविधान, पृष्ठ 14
3. बी0एल0 ग्रोवर एण्ड यशपाल : आधुनिक भारतीय इतिहास, पृष्ठ 374
4. के0पी0करुनाकर : कान्टीन्यूटी एण्ड चैन्ज इन इण्डियन पॉलिटिक्स, पृष्ठ 26
5. जवाहर लाल नहेरू : मेरी कहानी, पृष्ठ 33–34
6. जियोफ्रेवेस्ट : लाइफ ऑफ एनी बेसेंट, पृष्ठ 206
7. ए0आर0 देसाई : भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, पृष्ठ 247
   (एनी बेसेंट, बख (2) द्वारा उद्धृत, पृष्ठ 174)
8. हृदयनारायण एवं राम गुलाम गुप्ता : भारतीय शासन एवं राजनीति, पृष्ठ 244
9. एस0जेले0 जनेवा : सोवियत भूमि, 1991, अंक 9, पृष्ठ 44